Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिंदी सिनेमा में भारतीय संगीतकारों का योगदान

सतीश कुमार* डॉ. ज्योति मिश्रा**

*** शोधार्थी, संगीत (गायन) संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.) भारत**
**** असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.) भारत**

शोध सारांश – हिंदी सिनेमा के 100 साल के सफर में संगीतकारों ने कैसे फिल्म संगीत को बनाया और बदला। कैसे शास्त्रीय संगीत से शुरुआत कर डिस्को, रॉक और फ्यूजन का दौर आया और कैसे हमारे संगीतकारों ने फिल्मी गीतों को सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान बनाया। इन सभी विचारों के साथ मेरे इस लेख का प्रादुर्भाव हुआ है जिसका विस्तार से वर्णन अग्रलिखित हैं।
शब्द कुंजी – शास्त्रीय संगीत, फिल्म, प्रयोग, योगदान, संगीतकार, हिंदी सिनेमा।

प्रस्तावना – हिंदी सिनेमा जिसे हम बॉलीवुड के नाम से भी जानते हैं यह दुनिया की बड़ी–बड़ी फिल्म इंडस्ट्री में से एक है इसके इतिहास की शुरुआत होती है सन् 1913 में आई फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' से जो एक मूक फिल्म थी। और इसका निर्माण किया था 'दादा साहब फाल्के' जी ने इसी कारण आपको भारतीय सिनेमा का पितामह भी कहा जाता है।

राजा हरिश्चंद्र फिल्म की सफलता के बाद आपने कई और मूक फिल्मों का निर्माण किया जैसे– कृष्ण जन्म, सावित्री, लंका दहन आदि। इसके पश्चात धीरे–धीरे विकास के पथ पर अग्रसर होते हुए हिंदी सिनेमा मूक फिल्मों से सवाक फिल्मों के दौर में आ गया और हिंदी सिनेमा की पहली सवाक फिल्म सन् 1931 में आई 'आलम आरा' इस फिल्म में पहली बार लोगों ने वाद्य यंत्रों की आवाज सुनी और यही से हिंदी सिनेमा में संगीत की भी शुरुआत हुई।

हिंदी सिनेमा में संगीत को फिल्म की तीसरी आंख माना जाता है जहां डायलॉग खत्म होने पर भी कुछ बातों को गीतों से पूरा किया जाता है और इन गातों को संगीतबद्ध किया हमारे कई महान संगीतकारों ने और आज भी करते आ रहे हैं।

संगीतकारों की भूमिका के विषय में चर्चा से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि हिंदी सिनेमा का संगीत दुनिया भर के सिनेमा संगीत से क्यों अलग है।

हम सभी जानते हैं कि दुनिया भर में फिल्में बनती हैं और वहां भी फिल्मों में संगीत होता है चाहे वह हॉलीवुड हो, कोरियन हो, या किसी भी देश का हो पर हिंदी सिनेमा का संगीत एक अलग और अनोखी चीज़ है जिसके कारण निम्नलिखित है।

1. **गीत फिल्म से कनेक्ट रहते है–**हॉलीवुड फिल्म में अगर गीत आ जाए तो लोग इंटरवल समझ कर दूसरे काम करने लगते हैं लेकिन अगर बात की जाए हिंदी फिल्मों की तो लोग गीत आते ही सारा काम भूलकर स्क्रीन पर नजरें जमा लेते हैं क्यों क्योंकि गीत यहां कहानी को रोकता नहीं जोड़ता है मदर इंडिया में जब नरगिस पर 'दुनिया में हम आए हैं तो जीना ही पड़ेगा' गीत फिल्माया गया तो गीत ने इन चंद मिनट में ही उसके जीवन के 20 साल का संघर्ष दिखा दिया बिना गीत के ये दिखाने के लिए 20 सीन्स लगते, संगीतकार यहां समय को सुरों में लपेट देता है।

2. **शास्त्रीय लोक और पाश्चात्य का संगम–**भारत के संगीतकार खिचड़ी पकाने में माहिर हैं जैसे नौशाद ने बैजू बावरा में राग दरबारी और मालकौंस पर पूरा का पूरा एल्बम बना डाला था और वह हिट भी बहुत हुआ, एस.डी.बर्मन ने त्रिपुरा के लोकगीत को मेरे सपनों की रानी गीत में बखूबी ढाल दिया,आर डी बर्मन का गीत महबूबा–महबूबा में खुद की उनकी आवाज,बोतल की ताल, और पूरा गाना पारसी धुन में डूबा हुआ बेहतरीन कंपोजिशन साबित हुआ।

इतना ही नहीं ए.आर.रहमान ने ताल के टाइटल ट्रैक में कत्थक की थाप, इलेक्ट्रॉनिक बीट और ताश के पत्तों की आवाज को एक साथ मिला दिया और फिर जो तैयार हुआ वह आज तक सब की जुबान पर हैं, वैसे सही भी है कि यह खिचड़ी दुनिया भर में कहीं भी नहीं पकती, इसीलिए नाटू–नाटू सुन के नार्वे का आदमी भी नाचने लगता हैं।

वैसे इन सब बातों के बाद भी एक बात बच जाती है और वह यह है कि यहां पर संगीतकार सिचुएशन को कंपोज करते है पश्चिम में कंपोजर को कहा जाता है कि एक सैड सोंग चाहिए, जबकि भारतीय सिनेमा में डायरेक्ट बोलते है 'हीरोइन' 2 साल बाद हीरो को स्टेशन पर मिलती है वह कुछ कह नहीं पा रही है और बारिश भी हो रही है तुम देखो क्या करना है' और तब गीत आता है 'लग जा गले' इसी वजह से हिंदी फिल्मों का संगीत इतने वर्षों से जिंदा है।

अब हम यहां कुछ प्रमुख संगीतकारों की भूमिका के विषय में चर्चा करेंगे जिन्होंने अपने संगीत से हिंदी सिनेमा के विकास को गति दी साथ ही विश्व स्तर पर भी हिंदी सिनेमा को पहचान दिलाई।

हिंदी सिनेमा में भारतीय संगीतकारों के योगदान को हम मुख्यत: चार भागों में बांट सकते हैं।

1. बुनियाद के साज़ (1930–1950)
2. बदलाव और प्रयोग (1950–1980)
3. नई आवाज़ नई टेक्नोलॉजी (1980–2010)
4. बी.जी.एम और नई जुबान (2010–2026)

1. **बुनियाद के साज़ (1930–1950)–** 1931 में जब फिल्म आलम

आरा आई उसमें सात गीत थे, पर उन गीतों के लिए कभी संगीतकार को क्रेडिट नहीं दिया जाता था। उसका एक मुख्य कारण था, वह यह कि उस दौर में संगीत नाटक मंडली से आता था हारमोनियम, ढोलक और तबला बस। हीरो तो खुद ही गीत गाते थे। के. एल.सहगल जैसी आवाजें लाइव ही रिकॉर्ड होती थी एक टेक, एक माइक और पूरा गीत रिकॉर्ड। रि-टेक करने का मतलब पूरा आर्केस्ट्रा फिर से बैठे। और फिर आए वह लोग जो इस नाटक को संगीत में तब्दील कर गए।

अनिल बिस्वास-अनिल बिस्वास को प्लेबैक का जनक कहा जाता है इन्होंने ही सबसे पहले प्लेबैक सिंगिंग का काम शुरू किया मतलब अब हीरो हीरोइन होंठ हिलाएंगे और गीत पीछे से कोई और गाएगा इससे लता, रफी, मुकेश जैसी आवाजों का रास्ता खुल गया। अनिल दा ने ही राग-दारी को इस कदर फिल्मी संगीत में घोला की आम आदमी 'सीने में सुलगते हैं अरमान' जैसे शास्त्रीय बेस्ड गीत गुनगुनाने लगे। उन्होंने आर्केस्ट्रा में भी पियानो, वायलिन जैसे वेस्टर्न इंस्ट्रूमेंट्स का इस्तेमाल शुरू किया।

नौशाद अली-नौशाद अली जी को शास्त्रीय संगीत का व्यास कहा जाता है फिल्म बैजू बावरा में उन्होंने पूरा एल्बम राग बेस्ड बना दिया दरबारी, पुरिया, तोड़ी। लोग थिएटर से रागों को गुनगुनाते हुए निकले, फिल्म मुगल-ए-आजम में आपने 100 पीस आर्केस्ट्रा का इस्तेमाल किया, बड़े गुलाम अली से 'प्रेम जोगन बन के' गवाया, कहते हैं मोहे पनघट के गीत के लिए लता मंगेशकर जी से 12-12 घंटे रियाज करवाया तब जाकर टेक ओके हुआ। नौशाद जी को ठहराव पसंद था उनका कहना था संगीत शोर नहीं और है। इसी वजह से 'मन तड़पत हरि दर्शन को' गीत आज भी लोगों को रुला जाता है। एक किस्सा जो सब कहते हैं बैजू बावरा के दौरान नौशाद ने मोहम्मद रफी से कहां यह तान उस्ताद की तरह चाहिए रफी ने 15 दिनों तक रियाज किया गीत रिकॉर्ड हुआ 'ओ दुनिया के रखवाले' जब फिल्म रिलीज हुई पंडित जवाहर लाल नेहरू ने नौशाद को बुलाकर कहा आपने शास्त्रीय संगीत को मारने से बचा लिया।

सी. रामचंद्र-फ्यूजन के पहले उस्ताद श्री रामचंद्र चंद थे नौशाद शुद्ध थे वही श्री रामचंद्र शरीर उन्होंने कहा फिल्म देखने लोग हंसने-रोने आते हैं राग सुनते नहीं और 'शोला जो भड़के' जैसा रॉक, 'ईना-मीना-डीका' जैसा देसी, और 'आना मेरी जान संडे के संडे' जैसा पॉप सॉन्ग 1950 में ही दे दिया। यह आर.डी.बर्मन के 20 साल पहले का डिस्को था, सी.रामचंद्र ने ही पहली बार हीरो से सिटी बजवाई गाने में डायलॉग डालें।

इस दौर का योगदान :

1. 1930 से 1950 तक के संगीतकारो ने शास्त्रीय संगीत को जनता तक पहुंचा नौशाद, अनिल बिस्वास ने रागों को कोठी से निकलकर झोपड़ी तक पहुंचा दिया।
2. गीतों को कहानी का हिस्सा बनाया, गीतों को ऐसा बनाया की गीत हटा दो तो कहानी समझ ही ना आए प्यासा फिल्म का 'ये दुनिया अगर मिल भी जाए' गीत इस फिल्म को बिना इस गीत के सोचो आधी फिल्म गायब।
3. संगीतकार को इज्जत दिलाई मुगल-ए-आजम के पोस्टर पर नौशाद अली का नाम दिलीप कुमार से बड़ा था यह इज्जत जो आज ए.आर.रहमान को मिलती हैं उसकी नींव यही पड़ी थी।

2. बदलाव और प्रयोग (1950-1980)- 1960 आते-आते इंडिया बदल रहा था रेडियो पर बी.बी.सी, शहर में कैबरे, और युवाओं के हाथ में गिटार स्टूडियो के पुराने संगीतकारों से लोग बोलने लगे कुछ नया सुनाओ बस यही से शुरू हुआ प्रयोग का दौर।

एस.डी. बर्मन-आपको लोक और शास्त्रीय संगीत का पूल कहा जाता है, आपने बंगाल के बाउल और भटियाली को मुंबई की फिल्मों में इज्जत दिलाई, गाइड 1965 का गीत 'आज फिर जीने की तमन्ना' और 'गाता रहे मेरा दिल' एक ही फिल्म में दर्द भी मस्ती भी, आपकी खासियत थी कि आप कम इंस्ट्रूमेंट का प्रयोग करके भी अच्छा संगीत तैयार कर लेते थे और इसी विरासत में अपने बेटे आर.डी. बर्मन को भी तैयार किया।

आर.डी. बर्मन (पंचम दा)-अगर नौशाद ठहराव थे तो आर.डी.बर्मन तूफान थे। 'दम मारो दम' 1971 में रॉक, 'चुरा लिया' में गिटार, 'महबूबा-महबूबा में खाली बोतल को बाजवा देना' यह सब आपकी खासियत थी। रात के 2:00 बजे स्टूडियो बुलाकर आप गीत बनाते थे, 'यादों की बारात' फिल्म 1973 को लोग इंडिया का पहला पॉप एल्बम कहते हैं। पंचम दा ने कहा- सुर कहीं से भी निकल सकता है चाहे कांम्ब हो या ग्लास।

लक्ष्मीकांत प्यारेलाल-आपकी की जोड़ी ने बिना रुके 35 सालों तक हिट पे हिट फिल्में दी, करीब 750 से अधिक फिल्मों में अपने संगीत दिया जिसमें से कुछ प्रमुख है। अमर अकबर एंथोनी, कर्ज, राम-लखन आदि आपका सिग्नेचर था वायलिन और मंडोलिन का ग्रुप।

इस दौर का योगदान:

1. वेस्टर्न इंस्ट्रूमेंट गिटार, ड्रम्स, सैक्सोफोन फिल्मों में प्रयोग किया जाने लगा। 'आजा-आजा मैं हूं प्यार तेरा' बिना इन इंस्ट्रूमेंट के सोच ही नहीं सकते।
2. गीत फिल्मों से बड़े होने लगे तीसरी कसम फिल्म फ्लॉप हो गई पर 'सजन रे झूठ मत बोलो' आज भी अमर है। संगीत फिल्म को पार कर गया।

3. नई आवाज नई टेक्नोलॉजी (1980-2010)

ए.आर.रहमान-1990 का समय था हर घर में टीवी आ गया और कैसेट का जमाना था इसी दौर में साउथ से एक शांत सा लड़का मुंबई आया ए.आर.रहमान फिल्म 'रोजा' 1992 ने पूरा खेल बदल दिया। पहली बार सिंथ, तिल्लाना और कव्वाली एक ही गाने में सुनने को मिले, गीत 'छोटी सी आशा' में बच्चों की आवाज, 'ताल से ताल मिला' गीत में ताश के पत्तो की धुन। रहमान का कहना था 'स्टूडियो में घंटी नहीं सोच बजनी चाहिए।'

जतिन-ललित-फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे, कुछ कुछ होता है। जैसी कई फिल्मों को आपने अपने संगीत से सजाया। 90 का प्यार इनके बिना अधूरा था और मंडोलिन आपके संगीत की जान थी।

नदीम-श्रवण- 90 के दौर में आपका संगीत काफी लोकप्रिय रहा, उस वक्त लगभग हर दूसरी फिल्म में आपका ही संगीत होता था। आशिकी, साजन, जैसी तमाम फिल्मों में आपने अपना सदाबहार संगीत दिया आलम यह था कि आशिकों की डायरी आपके ही गीतों से भरी होती थी।

अनु मलिक-बाजीगर से बॉर्डर तक आपने कई सुपरहिट फिल्मों में संगीत दिया 'संदेशे आते हैं' सुनकर आज भी लोगों की आंखें नम हो जाती है।

शंकर-एहसान-लॉय-फिल्म 'दिल चाहता है' 2001 से कॉलेज वाला सॉन्ग शुरू हुआ, गिटार, सैक्सोफोन और दोस्ती वाली मस्ती के गीतों ने लोगों को खूब झुमाया। फिल्म 'कल हो ना हो' के टाइटल ट्रैक ने लोगों को हंसते-हंसते रुला दिया। आपने फिल्म 'बंटी और बबली' में यूपी के फोक सांग को हिप हॉप बना दिया। इन तीनों ने बताया कि फिल्मी गीत-संगीत

अंकल नहीं, हम उम्र भी हो सकता हैं।

प्रीतम–2003 के बाद प्रीतम का दौर शुरू हुआ धूम, बर्फी, ए दिल है मुश्किल, 2000 के बाद सबसे ज्यादा चार्टबस्टर आपने ही दिए। आपकी खासियत यह थी कि आप हर फिल्म का मूड पकड़ लेते थे। फिल्म बर्फी में चौपलिन जैसा म्यूजिक, और फिल्म काकटेल में पार्टी म्यूजिक।

इस दौर का योगदान:

1. ए आर रहमान ने गीत 'जय हो' के लिए ऑस्कर और ग्रैमी दोनों अवार्ड जीते दुनिया ने माना इंडियन म्यूजिक सिर्फ सितार नहीं हैं।
2. अब गानें फिल्म से पहले हिट होने लगे, पहले फिल्म हिट होती थी फिर गाने लेकिन अब 'मुन्नी बदनाम' और 'शीला की जवानी' पहले ही वायरल हो गये और फिल्म बाद में देखी गई।

4. बी.जी.एम और नई जुबान (2010–2026)–2010 के बाद सी.डी खत्म और यूट्यूब पर ही गाने रिलीज होने लगे गाने रिलीज होने के पहले टीजर, लिरिकल और फिर पूरा वीडियो अब हिट होने का नया पैमाना बन गया, व्यूज जितने ज्यादा गाना उतना हिट।

इसी दौर में गायक अरिजीत सिंह फिल्म आशिकी–2, 2013 से हिंदी सिनेमा में आए और गीत 'तुम ही हो' से पूरी दुनिया पर छा गए। बिना डांस बिना आइटम नंबर सिर्फ दर्द, आज के समय में अरिजीत सिंह के चार अरब से ज्यादा स्ट्रीम है। आपकी आवाज में खरोच है जो तुरंत दिल में लगती है।

अमित त्रिवेदी–आप फिल्म देव–डी 2009 से इंडी साउंड फिल्मों में लाये, गीत 'इमोशनल अत्याचार' में ब्रास बैंड और 'लंदन ठुमक दा' में पंजाबी ढोल पर लोगों को खूब नचाया।

विशाल–शेखर–फिल्म 'अंजाना–अंजानी' से 'पठान' तक आपके संगीत की एक लंबी श्रृंखला है। जिसने लोगों का खूब मनोरंजन किया और आपके गीत 'बेशर्म रंग' ने बता दिया की कंट्रोवर्सी भी पब्लिक सिटी हैं। इस गीत ने भी काफी लोकप्रियता प्राप्त की।

सचिन–जिगर, मिथुन, तनिष्क–यह नई जनरेशन है और ऐसी जोड़ी है जिन्होंने एक ही एल्बम में सूफी,ई.डी.एम और रैप तीनों डाल दिया।

बी.जी.एम बना नया हीरो–पहले गीत याद रहते थे, लेकिन अब फिल्मों में बी.जी.एम भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। के.जी.एफ फिल्म का तूफान, एनिमल का पापा मेरी जान, पुष्पा का श्रीवल्ली इसी के उदाहरण है। बी.जी.एम पर रील बनती हैं। रवि बसरूर, संचित–अंकित बल्हारा जैसे नाम सिर्फ बी.जी.एम से सुपरस्टार बन गए, अब सिर्फ 15 सेकंड का हुक भी फिल्म चला देता है।

निष्कर्ष–हिंदी सिनेमा में भारतीय संगीतकारों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सन् 1931 में फिल्म आलम–आरा के सात गानों से लेकर 2025 में स्त्री–2 के बी.जी.एम तक हिंदी सिनेमा का संगीत एक नदी की तरह बहता रहा। कभी रागों का घाट, कभी रॉक का किनारा, तो कभी ई.डी.एम का समुंदर,पर यह धारा कभी नहीं टूटी और इस संगीत रूपी नदी का हर मोड़ बनाया एक संगीतकार ने।

हिंदी सिनेमा के भारतीय संगीतकारों ने ना सिर्फ राग, देसी गीत, भजन,कव्वाली, रॉक आदि को अपने संगीत के द्वारा घर–घर तक पहुंचाया बल्कि भारत को एक अलग सांस्कृतिक पहचान दिलाई। आज भी हर एहसास का एक गीत आपको कहीं ना कहीं किसी फिल्म में सुनने को मिल ही जाएगा। आज आधुनिकता के दौर में ए.आई गीत लिख देगा कल शायद गा भी देगा, पर जब तक इंसान को खुशी में नाचना है,और दु:ख में रोना है तब तक उसे एक इंसान चाहिए जो उस एहसास को सुर दे सके, और वह इंसान है हमारे संगीतकार।

इसीलिए अगली बार जब कोई गीत सुनकर आपकी आंखें भर आए या पैर खुद–ब–खुद थिरकने लगे तो एक सेकंड रुक कर उस संगीतकार को मन ही मन में धन्यवाद बोल देना। क्योंकि पर्दे पर नाच हम रहे है पर धुन उसने बनाई हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. चटर्जी सुजॉय (2012) कारवां सिने संगीत का उत्पत्ति से स्वराज के विहीन तक 1931–1947, दिल्ली यश प्रकाशन।
2. झा मोहनानंद (2012) भारत के महान संगीतज्ञ, नई दिल्ली यश प्रकाशन।
3. शर्मा डॉ. इंदु 'सौरभ' (2006) भारतीय फिल्म संगीत में ताल समन्वय ,नई दिल्ली कनिष्क प्रकाशन।
4. शर्मा नवल किशोर, (2013) फिल्म संगीत का बदलता स्वरूप, जयपुर,राघव पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर।
5. भार्गव अनिल, भारतीय संगीत का इतिहास, (2016), जयपुर सिने साहित्य प्रकाशन।
6. इंटरनेट/विकिपीडिया

****